बरेली, शुक्रवार
26 जून, 2026
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 20+4=24

दैनिक जागरण

PAGE NO.- III : BOTTOM

कल मुझे इम्तिहान देना है, आज रिश्तों को पढ़ रहा हूं मैं...

जासं, बरेली: एसआरएमएस रिद्धिमा के सभागार में गुरुवार शाम मुशायरे की शाम 'बज्म ए सुखन' का आयोजन हुआ। इसमें इमरान सैदपुरी ने 'जिसने की सीधी जूतियां मेरी, वो गिनाता है खामियां मेरी। जिनको नीलाम कर चुका मैं, वो लगाते हैं बोलियां मेरी' कलाम पढ़ा। शायर सुरेन्द्र नाज बदायुंनी ने कहा, 'पत्ता-पत्ता बिछड़ रहा हूं मैं, रफ्ता-रफ्ता उजड़ रहा हूं मैं। कल मुझे इम्तिहान देना है, आज रिश्तों को पढ़ रहा हूं मैं। शायरा तस्लीम बानो ने कहा- 'बस अजनबी ही ना हुए इक साथ रहने से, इतने बढ़े थे शिकवे कि रिश्ता अजीब था। जब जख्म भर गए मुझे वीरान कर गए, ऐसी खता थी कुछ भी न खलना अजीब था।' शायर सरवत परवेज सहसवानी ने अपने कलाम 'है तकाजा प्यार के सांचे में ढल कर आइए, दोस्ती की राह में कुछ दूर चलकर आइए। है बड़ा पुरकैफ मंजर इस जहां में चारसू, कुंद जहनों से जरा बाहर निकाल कर आइए' से दोस्ती और इश्क को उजागर किया। शायर मिर्जा मखदूम बेग बरेलवी ने 'तूफान के आने का कोई डर नहीं होता, दरिया के किनारे जो मेरा घर नहीं होता, या प्यास न होती मिरे बेचैन लबों पर, या सामने आंखों के समंदर नहीं होता' सुनाकर जीवन दर्शन को उजागर किया। शायर डा. संजीव श्रीवास्तव ने शेर 'कहां जाएगा तू ओ बेताब परवाने, तेरी आहट से ही शम्मा घबरा गई है' से इश्क की दीवानगी की व्याख्या की।

रिद्धिमा में मुशायरे की शाम 'बज्म ए सुखन' में मौजूद अतिथि • सौ. आयोजक

संचालन फरदीन अहमद खान ने की। उन्होंने 'खुशबू है इसमें आपके दस्त ए करीम की, कैसे भला ये पीठ का खंजर निकाल दूं' सुनाकर श्रोताओं की वाहवाही हासिल की। इस अवसर पर ट्रस्ट संस्थापक देव मूर्ति, डा. एमएस बुटोला, डा. प्रभाकर गुप्ता, डा. अनुज कुमार, डा. शैलेश सक्सेना, डा. रीता शर्मा आदि लोग मौजूद रहे।